an>

Title: Submission regarding 40 Indians reportedly abducted and killed by ISIS militants in Iraq.

श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया (गुना) : अध्यक्ष महोदया, हम सब लोगों को एक बड़ी दुःखद सूचना मिली है। भारत के चालीस नागरिक जो मोसुल में तुर्की कंस्ट्रक्शन कंपनी में कार्य कर रहे थे, उनका अपहरण आईएसआईएस द्वारा किया गया था। वे ज्यादातर पंजाब और कोलकाता से थे। पहले चरण में आतंकवादियों के द्वारा उनका मोबाइल और पासपोर्ट ज़ब्त किया गया था। हमें सूचना मिली है कि 15 जून को ही एक पहाड़ी इलाके पर ले जा कर उन सभी को मारा गया है। अगर यह सूचना सही है तो यह देश के लिए, संसद के लिए और हम सब के लिए बड़ी दुखद है। पिछले 6 महीनों में बार-बार सरकार ने स्पष्टीकरण दिया है। 22 जून को विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने अपने स्पष्टीकरण में कहा था और यह पूरा भरोसा दिलाया था कि ये सारे 40 लोग सुरक्षित हैं। उन्होंने यह भी कहा था कि सरकार अलग-अलग सूत्रों के द्वारा उनके साथ चर्चा करने की कोशिश कर रही है, जिस मिलिटेंट आर्गनाइजेशन ने उनको पकड़ा है। सूत्रों जैसे इराकी रेड क्रिसेन्ट, लोकल ट्राइबल नेताओं के द्वारा उनके साथ वार्तालाप तय करने की कोशिश कर रही है। 29 जून को इस साल विदेश मंत्री सुषमा स्वराज जी ने स्वयं हम लोगों को आश्वस्त करवाया था कि उन्होंने स्वयं उनके परिवारजनों के साथ मुलाकात की है। हमारे राजदूत का सन्देश परिवारजनों को पढ़ाया गया और यह भी कहा गया कि परिजन पूरी तरह से संतुष्ट हैं और हमारे सारे कर्मचारी पूरी तरह से सुरक्षित हैं। अनेक इस सरकार के मंत्री परिवारजनों के साथ मिलकर फोटो-अप कर रहे थे। 7 जुलाई को दोबारा विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा कि इन्टरलोक्यूटर्स के द्वारा हमारी नागरिकों के साथ बात हो रही है और वे सुरक्षित हैं। दोबारा 13 अगस्त को भी कहा गया कि वे सुरक्षित हैं और 8 सितंबर को सुषमा स्वाराज जी ने दोबारा हम लोगों को आश्वस्त कराया था कि हमारे सारे 40 के 40 नागरिक पूरी तरह से सुरक्षित हैं और उन्हें रिहा करने की पूरी कोशिश की जा रही है। तो आज यह बड़ी दुखद सूचना हमें दी गयी है।

मैं समझता हूँ कि आज सरकार की जवाबदेही है। जहाँ एक तरफ 6 महीने इस मुद्दे को खींचा गया है और कहा गया कि उनके परिवारजनों को ईद का तोहफा को दिया जाएगा। आज हम यह स्पष्टीकरण चाहते हैं कि उनके परिवारजनों को, संसद को और देश को, अगर यह बात सत्य है तो पूरी तरह से गुमराह किया गया है। सरकार का सूचना तंत्र पूरी तरह से विफल है, सरकार पूरी तरह से विफल है। आज संसद में बैठे सभी सांसद ही नहीं, देश की जनता भी सरकार से पूरा-पूरा स्पष्टीकरण, पारदर्शिता और जवाबदेही इस मुद्दे पर चाहती है।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : मैं सभी मेंबर्स से एक बात कहना चाहती हूँ।

â€¦(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : एक मिनट, आप बैठ जाइए।

â€¦(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : मैं यह क्लियर करना चाहती हूँ कि पहली बात तो यह है कि प्रमुख विपक्षी दल का नोटिस अभी आया, उसके पहले माननीय मंत्री जी ने कल मुझे कहा था, यहाँ इन्फॉर्म किया गया था कि मैं इस विषय पर स्पष्टीकरण सदन में देना चाहूंगी और मैंने उनको अलाऊ भी किया था। वह तो केवल उन्होंने अभी हाँ भरी, कहा कि ठीक है, प्रमुख विपक्षी दल कुछ कहना चाहता है, इसलिए मैंने उन्हें अलाऊ किया है। आप उनके साथ असोसिएट हो सकते हैं। आप अपने-अपने नाम असोसिएशन के लिए लिखकर भेज दीजिए। माननीय मंत्री जी ने पहले ही कहा था, मैं रिपोर्ट करना चाहूँगी।

अब मैं माननीय मंत्री जी से कहूँगी कि वे अपनी बात रखें।

â€¦(व्यवधान)

HON. SPEAKER:

Shri Rajesh Ranjan,

Shrimati Kavitha Kalvakuntla,

Shri Badruddin Ajmal,

Shri Sankar Prasad Datta,

Shri M.B. Rajesh,

ADV. Joice George and

Shri P. Karunakaran are permitted to associate with the issue raised by Shri Jyotiraditya Scindia.

विदेश मंत्री तथा प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री (श्रीमती सुषमा स्वराज) : अध्यक्षा जी, मैं आपकी आभारी हूँ कि आपने स्थिति स्पष्ट कर दी। जितनी जोर-जोर से ज्योतिरादित्य सिंधिया कह रहे थे कि जवाबदेही चाहिए, एक नोटिस भी उन्होंने आज स्थिति का स्पष्टीकरण देने के लिए नहीं दिया। जैसा आपने कहा, मैंने सुबह ही आपको लिखित में यह नोटिस दे दिया कि मैं स्वयं अपनी ओर से स्थिति को स्पष्ट करना चाहूँगी, क्योंकि, कल जब मैं नेपाल से लौटी, मैं रात में लौटी थी, उसी समय मैंने देखा कि एक टी.वी. चैनल पर बांग्लादेश के दो नागरिकों का इंटरव्यू दिखाकर यह कहा जा रहा था कि 39 भारतीय कहाँ हैं और ध्वनि यह आ रही थी कि जैसे उनको मार दिया गया है। मुझे लगा कि यह जो भ्रम की स्थिति बनी है, इसका मैं अपनी ओर से निराकरण करूँ। इसलिए बिना विपक्ष के नोटिस का इन्तजार किये, मैंने स्वयं अपने आपको जवाब देने के लिए प्रस्तुत किया है। यहाँ भी जब ज्योतिरादित्य जी ने यह कहा कि वे बोलना चाहते हैं तो मैंने कहा कि मुझे कोई आपत्ति नहीं है, वे बोल लें। उन्होंने अपनी बात कह दी, उसके बाद मैं बोलने के लिए खड़ी हुई हूँ।

सबसे पहले तो मैं सांसदों को यह बताना चाहूँगी कि यह खबर पहली बार नहीं आयी है। आपने कहा सूचना दी गयी है, किसने सूचना दी है? एक समाचार चैनल ने एक समाचार चलाया है और वह समाचार कोई पहली बार नहीं आया है।

महोदया, पिछले 5 महीने में दसियों बार यह कहानी उभर-उभरकर आयी है और सोर्स एक ही है। वह व्यक्ति जो वहाँ से आ गया, हरजीत मसीह उसका सोर्स है।...(व्यवधान)

श्री भगवंत मान (संगरूर): वह कहाँ है?

श्रीमती सुषमा स्वराज : मैं बताऊँगी। ज़रा भी मत विचलित होइए। मैं बताऊँगी वह कहाँ है। ...(व्यवधान) सबसे पहले मैं बता देती हूँ अगर आप जानना चाहते हैं। वह गवर्नमैंट की प्रोटैक्टिव केयर में है, क्योंकि सबसे बड़ा खतरा आज उसकी जान को है। वह वहाँ से निकलकर भागा, उनके चंगुल से निकलकर भागा, पहला निशाना वह है। इसीलिए सरकार ने उसको संरक्षण दिया है। आपको इससे शांति हो गई, तो मैं आगे बोलती हूँ। ...(व्यवधान)

अध्यक्षा जी, यह कहानी बार-बार उभरी है। जिस समय यह घटना हुई, उसके बाद हरजीत मसीह जब वहाँ से बचकर आया तो उसने यह कहानी कही। उसने यह कहा कि - "हम और बंग्लादेशी एक कंपनी में काम करते थे। 15 जून की शाम को कुछ आतंकवादी संगठन के लोग आए और हम लोगों को वहाँ से निकालकर ले गए। वे हमें एयरबिल ले जा रहे थे। लेकिन रास्ते में उन्होंने बंग्लादेशियों से कहा कि तुम अलग हो जाओ। वे बंग्लादेशी अलग हो गए और भारतीय अलग कर दिए गए। भारतीयों को ले जाकर किसी एक जंगल में उन्होंने गोली से मार दिया और मैं बच गया और मैं आ गया।"

उसकी कहानी में इतनी डिसक्रीपैन्सीज़ थीं, इतने विरोधाभास थे कि पहली बार तो हमें इस पर विश्वास ही नहीं हुआ। फिर हमने यह सोचा कि अगर हम इस पर विश्वास करें तो इसका मतलब यह कि हम उनकी तलाश छोड़ दें और उनको मृत घोषित कर दें? उसके बाद यह विकल्प था। लेकिन एक दूसरा विकल्प भी था कि उसकी बात को अस्वीकार करते हुए हम उनकी तलाश करें। हमने दूसरा विकल्प चुना और हम उनकी तलाश में लग गए। मुझे सबसे ज्यादा खुशी हुई जब पहला सोर्स आया रैड क्रिसैन्ट का, क्योंकि संस्था है, मैं इसलिए नाम ले सकती हूँ, उन्होंने कहा कि वे मारे नहीं गए हैं, वे ज़िन्दा हैं। फिर हमने इतना प्रयास किया कि वे सारे देश, जो हमारी मदद कर सकते थे, जिसमें खाड़ी के भी देश थे, अन्य बहुत से देश थे, उन सबसे हमने संपर्क किया और बहुत हाइएस्ट लैवल पर संपर्क किया। उसके बाद हमने उन संस्थाओं से संपर्क किया जो हमारी मदद कर सकती थीं। उन व्यक्तियों तक से संपर्क किया, जिनके बारे में यह कहा जाता था कि वे आपकी मदद कर सकते हैं। अध्यक्ष जी, मैं यहाँ खड़े होकर कह सकती हूँ कि एक के बाद एक छः सोर्सेज़ ने हमें यह कहा कि वे मारे नहीं गए हैं। इन सारे सोर्सेज़ के संदेश जो हमें आ रहे थे, मौखिक नहीं थे, लिखित थे, लिखित में मेरे पास आज भी मौजूद हैं। लेकिन चूँकि गोपनीय दस्तावेज़ हैं, इसलिए मैं शेयर नहीं कर सकती उन लोगों के अलावा, जिन्होंने गोपनीयता की शपथ ले रखी है। लेकिन गोपनीयता की शपथ जिन्होंने ले रखी थी, उनमें से अपने दो साथियों से मैंने वे शेयर किये हैं। एक, श्री अरुण जेटली जी, और दूसरा, स्वयं हरसिमरत कौर बादल, जो मंत्री हैं, पंजाब से हैं, क्योंकि इसमें पंजाब के ज्यादा लोग हैं, जैसा भगवंत मान जी ने कहा, उनके साथ शेयर किये। ऐसा नहीं कि ये संदेश एक दिन आ गए और दस दिन नहीं आए। हर रोज़ यह संदेश आता है। मैंने पहले भी यहाँ सदन में कहा था कि जिस दिन यह घटना घटी, हमने उसी दिन एक ऑफिसर वहाँ डेप्यूट कर दिया, केवल इस काम के लिए। वहाँ एम्बैसेडर है, लेकिन उसके अलावा एक व्यक्ति जो पूर्व में वहाँ एम्बैसेडर थे, हालांकि उनकी नियुक्ति आसियान के एम्बैसेडर के तौर पर हो चुकी थी, मगर हमने उनको इराक जाने को कहा। उनको हमने केवल एक काम दिया टार्गेटिड - इनको ढूँढ़ने का, इनकी तलाश करने का। वे हमको वहाँ से, उनके जो जो संपर्क सूत्र थे, उनके माध्यम से संदेश भेजते थे। उन दोनों को भी मैंने संदेश पढ़वाए। और यह लेटेस्ट अपडेट आता है, हर रोज़ आता है। डेली रात को यह अपडेट लेकर मैं सोती हूँ कि क्या हुआ। आप मुझे बताइए कि एक व्यक्ति यह कह रहा है कि वे मार दिए गए और छः सोर्सेज़ यह कह रहे हैं कि वे मारे नहीं गए, वे ज़िन्दा हैं। मुझे क्या करना चाहिए - क्या यह स्वीकार करके, कि वे मार दिए गए, मैं हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाऊँ, उनकी तलाश छोड़ दूँ? यह आसान विकल्प है। लेकिन दूसरा विकल्प यह है कि जो छः सोर्सेज़ हमारे कह रहे हैं कि वे मारे नहीं गए हैं और ज़िन्दा हैं, उन पर विश्वास करते हुए आगे बढ़ूँ और उनकी तलाश करूँ। मैंने बार-बार सदन में यह कहा कि मेरा डायरैक्ट संपर्क उनसे नहीं है। लेकिन सूत्रों के माध्यम से संपर्क है, जो कहते हैं कि वे मारे नहीं गए हैं। मेरे पास ठोस सबूत ज़िन्दा होने का नहीं है, लेकिन मेरे पास ठोस सबूत उनके मारे जाने का भी नहीं है। तो केवल बुद्धिमत्ता का तकाज़ा नहीं, ज़िम्मेदारी का तकाज़ा भी यह कहता है कि मैं दूसरे विकल्प को स्वीकार करूँ और आगे बढ़ूँ। इसीलिए मैं आपसे भी यह कहना चाहती हूँ।

जहाँ तक हरजीत का सवाल है, मैंने भाई भगवंत मान जी को बता दिया। भाई भगवंत मान जी का पत्र मेरे पास है, जिस तरह से हम इराक से लोगों को निकाल रहे हैं। जैसे ही उन्होंने मुझे बोला और उनके लोगों से हमने संपर्क किया, क्योंकि वे बंधक नहीं थे तो वे तुरंत निकल आए। हम किन कठिन परिस्थितियों में काम कर रहे हैं, आप जानते हैं। मोसुल पर जिन लोगों का कंट्रोल है, उनकी सरकार नहीं है और जिनकी सरकार है, उनका कंट्रोल नहीं है। इतनी विषम परिस्थितियों में हम काम कर रहे हैं। हम क्यों गुमराह करेंगे ज्योतिरादित्य जी? हमें उससे क्या लाभ मिलेगा?

अध्यक्षा जी, मैं कहना चाहूंगी कि हम गुमराह करने के लिए नहीं, हम बचाने की कोशिश कर रहे हैं।

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे (गुलबर्गा) : आपके ऊपर कोई एलीगेशन नहीं लगा रहा है।...(व्यवधान)

श्री एस.एस.अहलुवालिया (दार्जिलिंग) : महोदया, मेरी एक गुजारिश है। यह विषय एक ऐसा संवेदनशील और सीरियस विषय है कि इस पार्लियामैंट की प्रोसीडिंग्स को आई.एस.आई.एस. भी देख रहा है। इन सारे तथ्यों को देख कर वह और बारगेन करेगा।...(व्यवधान) इस विषय को यहां समाप्त किया जाए।...(व्यवधान)

श्रीमती सुषमा स्वराज : अहलुवालिया जी, आप बैठिए।

माननीय अध्यक्ष : माननीय मंत्री जी भी जिम्मेदारी से ही बोलेंगी।

â€¦(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : ठीक है, हर एक का अपना सजेशन हो सकता है, हर एक की अपनी बात हो सकती है।

â€¦(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय मंत्री जी इस पर बोलने के लिए सक्षम हैं।

â€¦(व्यवधान)

श्रीमती सुषमा स्वराज : अध्यक्षा जी, मैं अहलुवालिया जी की बात को दूसरी तरह से कहना चाहूंगी।...(व्यवधान) इस तरह के ऑपरेशंस की सफलता का बुनियादी सिद्धांत होता है गोपनीयता। इसलिए गोपनीयता को भंग करने के लिए मुझे मजबूर न किया जाए। मैं आपको आश्वस्त कर रही हूं, बता रही हूं कि जिस दिन मुझे एक भी ठोस सबूत, हरजीत की बात का मिल गया, उस दिन आकर बताऊंगी। हम ईश्वर से दुआ कर रहे हैं कि जो छः सोर्सेज कह रहे हैं, वह सच हो और हम उन्हें सुरक्षित निकाल लाएं। लेकिन, सुरक्षित निकालने में, ऐसी स्थितियों में समय लगता है। जैसा मैंने कहा कि जो मोसुल में ऑपरेट कर रहे हैं, उनकी सरकार नहीं है और जिनकी सरकार है, वे मोसुल को कंट्रोल नहीं कर रहे हैं। ऐसी विषम परिस्थितियों में हम काम कर रहे हैं, ज़मीन-आसमान हम एक किए हुए हैं। हमने कांग्रेस के ई. अहमद जी की भी मदद मांगी है। उनसे भी मैंने कहा है कि आपके गल्फ़ में बहुत ज्यादा अच्छे संबंध हैं, आप वहां जाइए। हर संस्था से हमने सम्पर्क किया हुआ है। इसका मैं लैटेस्ट अपडेट ले रही हूं। इसलिए मैं यह नहीं कह सकती हूं कि वे मार दिए गए, क्योंकि एक हरजीत के अलावा यह कोई नहीं बोल रहा है।

अगर आप कल के भी बयान को देखें, जो दो बांग्लादेशी नागरिकों का इंटरव्यू आया है, वे केवल हरजीत को कोट कर रहे हैं। वे भी हरजीत को सपोर्ट नहीं कर रहे है, क्योंकि वे स्वयं तो कोई चश्मदीद गवाह हैं नहीं। वहीं तक यह कहानी इकट्ठी है कि बांग्लादेशी अलग कर दिए गए, भारतीय अलग कर दिए गए। जब भारतीय अलग कर दिए गए तो उनके साथ क्या घटा, यह तो किसी बांग्लादेशी ने देखा नहीं। जो हरजीत ने उन्हें आकर बताया, वे वह बोल रहे हैं। यह हीयरसे एवीडेंस है। वहां भी वे उसको सपोर्ट नहीं कर रहे हैं, केवल उसे कोट कर रहे हैं। इस पूरी स्टोरी में, चाहे वह इंडियन एक्सप्रेस में छपी हों, चाहे वह पंजाबी के अखबारों में छपी हों, या चाहे उनके परिवार के सदस्यों तक पहुंची हों, सबका एकमात्र सोर्स हरजीत है। लेकिन जैसा मैंने कहा कि हरजीत को भी संरक्षण दिया हुआ है, वह गवर्नमेंट के प्रोटेक्टिव केयर में है। हम लोग पूरी तरह से प्रयास कर रहे हैं।

अध्यक्षा जी, मैं आपकी आज्ञा से इस सदन की अनुमति चाहूंगी कि अगर उन्हें लगता है कि मेरा रास्ता सही है, मुझे हरजीत के एक बयान पर विश्वास करके अपने प्रयास रोकने नहीं चाहिए, तो मैं निश्चित चाहूंगी कि मुझे इस सदन की मदद मिले और मैं अपने प्रयास में आगे बढ़ती रहूं। यह सदन यह भी प्रार्थना करे कि वे लोग ज़िंदा हों और वे सुरक्षित निकल कर आ जाएं।